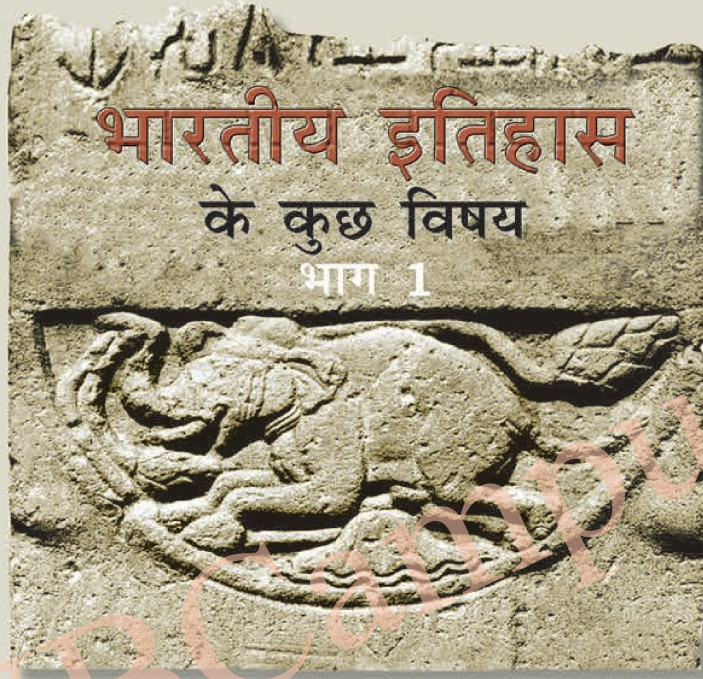


कक्षा 12 के लिए  
इतिहास की पाठ्यपुस्तक



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-700-0

### प्रथम संस्करण

मार्च 2007 फाल्गुन 1928

### पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007 कार्तिक 1929

अप्रैल 2009 बैसाख 1931

दिसंबर 2009 पौष 1931

जनवरी 2011 माघ 1932

जनवरी 2012 माघ 1933

मार्च 2013 फाल्गुन 1934

फरवरी 2014 माघ 1935

फरवरी 2015 माघ 1936

फरवरी 2016 माघ 1937

फरवरी 2017 माघ 1938

दिसंबर 2017 पौष 1939

जनवरी 2019 पौष 1940

PD 60T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
2007

₹ ???.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम.  
पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और  
प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016  
द्वारा प्रकाशित तथा एस.डी.ए. प्रिंट 'एन' पैक, डी-19,  
सेक्टर-बी1, ट्रॉनिका सिटी इंडस्ट्रियल एरिया, लोनी, जिला  
गाजियाबाद- 201 102 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

### सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिनिधि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की विक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। खड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

### एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सप्रेसवे, होस्टेल्केरे

बनाशंकरी III इस्टेज

बंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस

निकट: धनकल बस स्टॉप पतिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. काम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781021

फोन : 0361-2674869

### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

संपादक : नरेश यादव

सहायक उत्पादन अधिकारी : जहान लाल

### आवरण एवं सज्जा

आर्ट क्रियेशंस, नयी दिल्ली

कार्टोग्राफी

के. वर्गीज

## आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज्ञादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के अध्यक्ष, प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता एवं इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार, प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों

vi

की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली  
20 नवंबर 2006

निदेशक  
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान  
और प्रशिक्षण परिषद्

NBCampus

## अध्ययन का केंद्रबिंदु निश्चित करना

कौन सी बात इस किताब के केंद्रबिंदु को निर्धारित करती है? आखिर इस किताब का क्या लक्ष्य है? पिछली कक्षाओं की पढ़ाई से यह कैसे जुड़ी हुई है?

कक्षा 6 से 8 तक हमने भारतीय इतिहास के बारे में प्रारंभिक काल से आधुनिक युग तक की जानकारी प्राप्त की। हर वर्ष एक विशेष ऐतिहासिक काल के बारे में पढ़ाई की गई। कक्षा 9 और 10 की किताबों में परीक्षण का दायरा बदल गया। उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विपरीत यहाँ हमने एक छोटा सा काल चुनकर समकालीन विश्व का सूक्ष्म अध्ययन किया। क्षेत्रीय सीमाओं को लाँघते हुए, राष्ट्रीय-राज्यों के विस्तार से कहीं आगे बढ़कर, हमने यह जानने की कोशिश की कि दुनिया के अलग-अलग हलकों और मुल्कों के लोगों ने आज की दुनिया बनाने में क्या भूमिका अदा की है। भारतीय इतिहास एक बृहत्तर विश्व के अंतर्संबंधित इतिहास का हिस्सा बन गया। इसके बाद कक्षा 11 में हमने *विश्व इतिहास के कुछ विषयों* का अध्ययन किया। इस दौरान हमने पृथ्वी पर इनसानों के जीवन की शुरुआत से आज तक के लंबे अंतराल के बीच अपनी कालानुक्रमिक दृष्टि को विस्तार दिया। लेकिन हमने विशेष खोज के लिए सिर्फ कुछ विषयों को चुना। इस साल हम *भारतीय इतिहास के कुछ विषयों* का अध्ययन करेंगे।

यह किताब हड़प्पा से शुरू होती है और भारतीय संविधान के बनने पर खत्म होती है। इसमें पाँच हजार वर्षों का सामान्य सर्वेक्षण नहीं बल्कि कुछ विशेष विषयों का गहन अध्ययन किया गया है। पिछले वर्षों की किताबों ने आपको पहले ही भारतीय इतिहास से परिचित करा दिया है। अब समय आ गया है कि हम कुछ विषयों की गहराई से छानबीन करें।

जहाँ हमने आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विषयों को चुनकर बदलाव के अलग-अलग आयामों को समझने की कोशिश की है वहीं इनके बीच की दीवारों को भी तोड़ने का प्रयास किया है। जहाँ इस किताब के कुछ विषय आपको उस युग की राजनीति तथा सत्ता और शक्ति की प्रकृति से परिचित करवाएँगे, वहीं कुछ में यह समझने का प्रयास है कि समाज कैसे संगठित होता है, कैसे काम करता है और कैसे बदलता है। कुछ और अध्याय बताते हैं धार्मिक जीवन और रीति-रिवाजों के बारे में, अर्थव्यवस्थाओं के विषय में और ग्रामीण एवं शहरी समाजों में बदलाव के बारे में।

इनमें से हर विषय आपको इतिहासकारों के शिल्प से अवगत कराएगा। इतिहास को ढूँढ़ निकालने के लिए इतिहासकारों को स्रोतों की ज़रूरत पड़ती है जिनके माध्यम से अतीत के बारे में जाना जा सकता है। लेकिन स्रोत खुद-ब-खुद अतीत को प्रकट नहीं करते। इतिहासकारों को इन स्रोतों के साथ जूझना पड़ता है, इनकी व्याख्या करनी पड़ती है और उनसे अतीत के तथ्य बुलवाने पड़ते हैं। इसीलिए तो इतिहास एक दिलचस्प विषय बन जाता है। पुराने स्रोतों से भी हमें कई नयी जानकारियाँ मिल सकती हैं, यदि हम उनसे नए सवाल पूछें और उन पर अलग तरीके से नज़र दौड़ाएँ। इसलिए हमें यह जानने की ज़रूरत है कि इतिहासकार किस तरह स्रोतों को पढ़ते हैं और कैसे वे पुराने स्रोतों में नयी बातें खोज निकालते हैं।

लेकिन इतिहासकार सिर्फ पुराने स्रोतों का ही पुनर्परीक्षण नहीं करते। वे नए स्रोत भी खोज निकालते हैं। कई बार ये स्रोत आकस्मिक रूप से मिल जाते हैं। पुराविदों को कभी-कभी अनजाने में ही कोई मुहर या टीला दिख जाता है जिससे किसी प्राचीन सभ्यता के स्थल का सुराग मिल जाता है।

किसी कलेक्टर के धूल-धूसरित दस्तावेजों और लेखों के पुलिंदे की छानबीन करते हुए इतिहासकार अनजाने में किसी स्थानीय झगड़े के मुकदमे के कागजात पा लेता है और इनसे सदियों पहले के ग्रामीण जीवन का एक नया विश्व सामने खड़ा हो जाता है। क्या ये खोजें एक संयोग मात्र हैं? हो सकता है किसी अभिलेखागार में आपको अचानक पुराने दस्तावेजों का एक पुलिंदा मिल जाए। आप उसे खोल कर देखते हैं लेकिन आपको उसमें कोई महत्वपूर्ण बात नज़र नहीं आती। यदि आपके

मन में संबद्ध सवाल नहीं हों तो उस स्रोत का कोई मतलब नज़र नहीं आएगा। आपको स्रोत को खोजना होता है, मूल पाठ को पढ़ना होता है, सुरागों के पीछे लगना पड़ता है और इन सबका अंतर्संबंध ढूँढ़ना होता है तब जाकर आप अतीत का पुनर्निर्माण कर पाते हैं। किसी स्रोत की खोज मात्र से ही अतीत के रहस्य नहीं खुल जाते। जब अलेक्जेंडर कनिंघम ने पहली बार हड़प्पा सभ्यता की एक मुहर देखी तो वे इसका कोई मतलब नहीं निकाल पाए। काफ़ी समय बाद ही उस मुहर का महत्त्व समझ में आया।

वस्तुतः जब इतिहासकार नए सवाल पूछना शुरू करते हैं या नए विषयों की खोज करते हैं तब उन्हें अक्सर नए प्रकार के स्रोतों की खोज करनी पड़ती है। यदि हम क्रांतिकारियों और विद्रोहियों के बारे में जानना चाहते हैं तो सरकारी कागज़ात सिर्फ़ एक अधूरी छवि ही प्रस्तुत कर पाएँगे। एक ऐसी छवि जो सरकारी पक्ष के द्वेष और पूर्वाग्रहों से रँगी हुई होगी। हमें विद्रोहियों की डायरी, उनके व्यक्तिगत पत्र, उनके लेख और उद्घोषणाओं जैसे दस्तावेज़ों को ढूँढ़ने की ज़रूरत पड़ेगी। ये सब आसानी से नहीं मिलते। यदि हम 1947 के विभाजन के सदमे को झेलने वाले लोगों के अनुभवों को समझना चाहते हैं तो लिखित स्रोतों की अपेक्षा मौखिक स्रोत ज़्यादा बातें उद्घाटित कर पाएँगे।

जैसे-जैसे इतिहास की दृष्टि फैलती है वैसे-वैसे अतीत को समझने की कोशिश में लगे इतिहासकार नए सुरागों की तलाश में नए स्रोतों की खोज शुरू कर देते हैं। जब ऐसा होता है तब किन-किन चीज़ों को स्रोत माना जाए – इसकी समझ ही बदल जाती है। एक समय था जब सिर्फ़ लिखित दस्तावेज़ों को ही प्रामाणिक स्रोत माना जाता था। लिखित दस्तावेज़ों को सत्यापित किया जा सकता था, उनका हवाला दिया जा सकता था और उन्हें जाँचा जा सकता था। मौखिक साक्ष्य को एक वैध स्रोत ही नहीं माना जाता था। आखिर उसके सत्यापन या जाँच की गारंटी कौन लेता? मौखिक परंपरा में अविश्वास की यह स्थिति अभी भी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। लेकिन मौखिक परंपरा का अभिनव प्रयोग करके ऐसे अनुभवों को सामने लाया गया है जो दूसरे किसी दस्तावेज़ से प्रकट नहीं होते।

इस साल की किताब से आप इतिहासकारों की दुनिया में प्रवेश करेंगे, उनके साथ नए सूत्रों की तलाश करेंगे और देखेंगे कि वे किस तरह से अतीत के साथ संवाद करते हैं। आप देखेंगे कि वे किस तरह से स्रोतों से सार्थक जानकारी ढूँढ़ निकालते हैं, अभिलेखों को पढ़ते हैं, पुरास्थलों की खुदाई करते हैं, मनकों और हड्डियों के अर्थ निकालते हैं, महाकाव्यों की व्याख्या करते हैं, स्तूपों और इमारतों का निरीक्षण करते हैं, चित्रों और तस्वीरों का परीक्षण करते हैं, पुलिस की रपट और राजस्व के दस्तावेज़ों की व्याख्या करते हैं और अतीत की आवाज़ों को सुनते हैं। हर विषयवस्तु एक विशेष किस्म के स्रोत की खासियत और संभावनाओं पर विचार करेगी। यह चर्चा करेगी कि कोई स्रोत क्या बता सकता है और क्या नहीं।

**भारतीय इतिहास के कुछ विषय** पुस्तक का यह भाग 1 है। भाग 2 और भाग 3 इसी क्रम में होंगे।

**नीलाद्रि भट्टाचार्य**

मुख्य सलाहकार

इतिहास

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

## अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

## मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 10)

## सलाहकार

कुमकुम राय, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 2)

मोनिका जुनेजा, गेस्ट प्रोफेसर, इंस्टीट्यूट फ़ोरगेशीय (इतिहास संबंधी अध्ययन के लिए संस्था), विएना, ऑस्ट्रिया

## सदस्य

उमा चक्रवर्ती, रीडर (अवकाशप्राप्त), इतिहास, मिरांडा हाऊस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 4)

कुणाल चक्रवर्ती, प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 3)

जया मेनन, रीडर, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (विषय 1)

नजफ़ हैदर, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 9)

पार्थी दत्ता, रीडर, इतिहास विभाग, जाकिर हुसैन कॉलेज (सांध्य कक्षाएँ), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 12)

प्रभा सिंह, पी.जी.टी., केंद्रीय विद्यालय, ओल्ड कैट, तेलियरगंज, इलाहाबाद

फ़रहत हसन, रीडर, इतिहास विभाग, अलीगढ़ (विषय 5)

बीबा सोबती, पी.जी.टी., मॉडर्न स्कूल, बाराखंबा रोड, नयी दिल्ली

मुज़फ़्फ़र आलम, प्रोफेसर, दक्षिण-एशियाई इतिहास, शिकागो विश्वविद्यालय, शिकागो, यू.एस.ए.

मीनाक्षी खन्ना, रीडर (इतिहास), इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 6)

रजत दत्ता, प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 8)

रामचंद्र गुहा, स्वतंत्र लेखक, मानवविज्ञानी एवं इतिहासकार, बंगलौर (विषय 13)

रश्मि पालीवाल, एकलव्य, कोठी बाजार, होशंगाबाद

रुद्रांगशु मुखर्जी, कार्यकारी संपादक, 'दि टेलीग्राफ़', कोलकाता (विषय 11)

विजया रामास्वामी, प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 7)

सी.एन. सुब्रमण्यम, एकलव्य, कोठी बाजार, होशंगाबाद (विषय 7)

स्मिता सहाय भट्टाचार्य, पी.जी.टी., ब्लू बेलस स्कूल, कैलाश कॉलोनी, नयी दिल्ली

सुमित सरकार, प्रोफेसर-इतिहास (अवकाशप्राप्त), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 15)

## अनुवादक

### अनिल सेठी

पी.के. बसंत, रीडर, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

शालिनी शाह, रीडर, इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संजय शर्मा, लेक्चरर, आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सीमा एस. ओझा

हीरामन तिवारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

## सदस्य-समन्वयक

अनिल सेठी, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली (विषय 14)

सीमा एस. ओझा, लेक्चरर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

## आभार

यह पुस्तक, *भारतीय इतिहास के कुछ विषय*, भाग 1, बहुत सारी चर्चाओं के बाद प्रकाश में आई है। ये चर्चाएँ विषय-विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों के लेखकों, स्कूल के अध्यापकों तथा एन.सी.ई.आर.टी. के व्यावसायिक विशेषज्ञों के बीच लगातार होती रहीं। हम उन सभी के आभारी हैं जिन्होंने उत्साहपूर्वक इन चर्चाओं में हिस्सा लिया। पुस्तक सामूहिक बौद्धिक संसाधनों और अनुभवों का ही परिणाम है।

अध्यायों के प्रारूपों पर कई लोगों ने अपनी टिप्पणियाँ दीं, इससे अनेक मुद्दे स्पष्ट हुए और पांडुलिपि के सुधार में मदद मिली। खासतौर पर हम अपने युवा पाठकों, मीरा एवं संध्या विश्वनाथन के शुक्रगुजार हैं जिनके सुझावों व टिप्पणियों की वजह से प्रस्तुति ज्यादा प्रभावी बन पाई। बैशाख चक्रवर्ती ने हमें प्रोत्साहित किया। निगरानी समिति के सदस्यों प्रोफ़ेसर जे. एस. ग्रेवाल और शोभा वाजपेयी जी के सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण रहे।

प्रोफ़ेसर बी.डी. चट्टोपाध्याय ने अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बावजूद इस पुस्तक के लिए समय निकाला और आलोचनात्मक सलाह दी। प्रोफ़ेसर रणबीर चक्रवर्ती, प्रोफ़ेसर उपिन्द्र सिंह एवं डॉ. सुप्रिया वर्मा ने भी मूल्यवान सुझाव दिए। डॉ. नसीम अख्तर, श्री वीरेंद्र बांगरू और डॉ. सुरेश मिश्रा ने चित्रों और लिखित सामग्री के कुछ विशेष पहलुओं पर सलाह दी। सुश्री समीरा वर्मा ने दृश्य और लेखन संबंधी शोध में लगातार त्वरित सहायता दी।

हम उन सभी संस्थानों और व्यक्तियों को धन्यवाद देना चाहेंगे जिनसे हमें चित्र-मानचित्र आदि प्राप्त हुए : अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज़, गुड़गाँव, भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन और राष्ट्रीय संग्रहालय। प्रोफ़ेसर ग्रेगरी एल. पोशेल से प्राप्त चित्र संबंधी सामग्री विषय एक में प्रयोग की गई है। राष्ट्रीय संग्रहालय के श्री आर.आर.एस. चौहान और श्री जे.सी. ग्रावर एवं सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. के श्री वाई.के. गुप्ता की मदद से राष्ट्रीय संग्रहालय की पुरावस्तुओं की तस्वीरें ली जा सकी हैं। हम इन सभी के विशेष आभारी हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के श्री के. वर्गीज ने इस पुस्तक के लिए मानचित्र बनाए।

श्रीमती श्यामा वार्नर ने इस पुस्तक के अंग्रेज़ी संस्करण की कॉपी एडिटिंग व प्रूफ़ रीडिंग की। आर्ट क्रियेशंस, नयी दिल्ली की रितु टोपा व अनिमेश रॉय जी ने पुस्तक को डिज़ाइन किया। इस काम से जुड़े धीरज, ध्यान और लगन के लिए हम इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

हम श्री एल्बिनस टिकी और श्री मनोज हल्दर को भी उनके तकनीकी सहयोग और मदद के लिए धन्यवाद देना चाहेंगे। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली के अवकाशप्राप्त अनुसंधान अधिकारी (इतिहास एवं पुरातत्व) राजेन्द्र प्रसाद तिवारी ने पुस्तक के हिंदी अनुवाद में तकनीकी शब्दों को शुद्ध बनाने में योगदान दिया। हिंदी टाइपिंग का कार्य विजय कंप्यूटर, दिल्ली द्वारा किया गया। गिरीश गोयल और सरिता किमोठी डी.टी.पी. ऑपरेटर; मनोज मोहन कॉपी एडिटर ने इसमें सहयोग दिया। हम इन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

अंततः इस पुस्तक का प्रयोग करने वालों के सुझाव आमंत्रित हैं जिससे हमें इस पुस्तक के आगे आने वाले संस्करणों को सुधारने में मदद मिलेगी।



## भाग 1

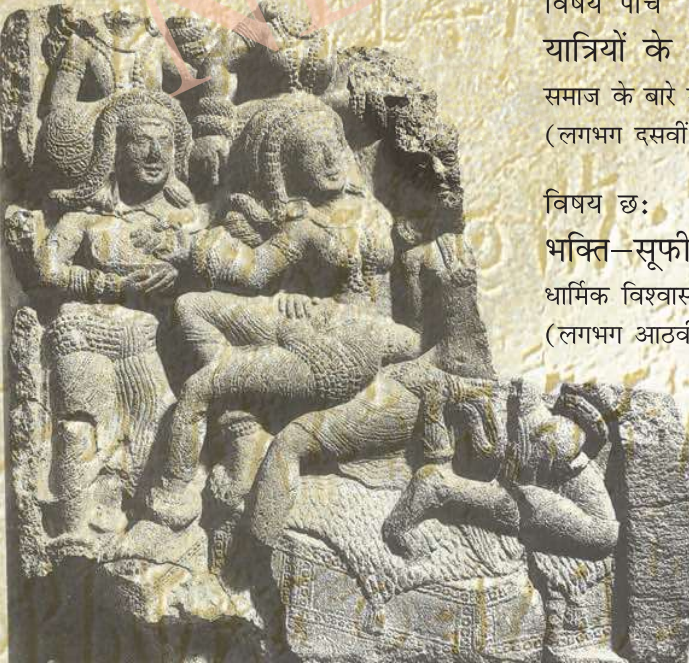
विषय एक . . . . .	1
ईदें, मनके तथा अस्थियाँ हड़प्पा सभ्यता	
विषय दो . . . . .	28
राजा, किसान और नगर आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)	
विषय तीन . . . . .	53
बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज (लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)	
विषय चार . . . . .	82
विचारक, विश्वास और इमारतें सांस्कृतिक विकास (लगभग 600 ईसा पूर्व से ईसा संवत् 600 तक)	



## भाग 2\*

विषय पाँच  
यात्रियों के नज़रिए  
समाज के बारे में उनकी समझ  
(लगभग दसवीं से सत्रहवीं सदी तक)

विषय छः  
भक्ति—सूफी परंपराएँ  
धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ  
(लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक)



विषय सात  
एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर  
(लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक)

विषय आठ  
किसान, ज़मींदार और राज्य  
कृषि समाज और मुगल साम्राज्य  
(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

विषय नौ  
राजा और विभिन्न वृत्तांत  
मुगल दरबार  
(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

### भाग 3\*

विषय दस  
उपनिवेशवाद और देहात  
सरकारी अभिलेखों का अध्ययन

विषय ग्यारह  
विद्रोही और राज  
1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

विषय बारह  
औपनिवेशिक शहर  
नगर-योजना, स्थापत्य

विषय तेरह  
महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन  
सविनय अवज्ञा और उससे आगे

विषय चौदह  
विभाजन को समझना  
राजनीति, स्मृति, अनुभव

विषय पंद्रह  
संविधान का निर्माण  
एक नए युग की शुरुआत